हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या – 10

कामायनी : एक असफल कृति है।

कामायनी आधुनिक हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक संभावनाशील रचना है। जो अनन्त रचनाओं को जन्म देती है, स्वभावतः वह विवादों को भी आमंत्रित करती है। 1936 ई० में जब गद्य के विस्फोट ने महाकाव्य-लेखन को प्रायः असंभव बना दिया था। 'कामायनी' उस विपरीत वातावरण में रचा गया महाकाव्य है। यही कारण है कि इसके आस्वादन की प्रक्रिया पारंपरिक महाकाव्यों जैसी सरल-सपाट नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रसाद ने जिन विचारों की रचना का आधार बनाया है। आधुनिक काल में उनकी प्रासंगिकता भी विवादों के घेरे में है। यही कारण है कि बहुत से समीक्षकों 'कामायनी' को असफल कृति बताते हैं। डॉ० इन्द्रनाथ मदान ने अपने लेख 'कामायनी : एक असफल कृति' में स्पष्ट शब्दों में यह बात कही है

इनके अतिरिक्त डॉ॰ रमेश कुन्तल मेघ, आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, दिनकर, मुक्तिबोध और डॉ॰ नामवर सिंह आदि ने भी अलग-अलग संदर्भों में यह राय व्यक्त की है।

क) कामायनी की सबसे बड़ी सीमा यह है कि प्रसाद इसे अंत में जबरन यथार्थलोक से खींचकर कल्पनालोक में ले गए हैं। इस कारण यह रचना आधुनिक युग के अनुकूल नहीं है क्योंकि आधुनिक युग की मानसिकता इहलोकवादी होती है न कि परलोकवादी। यह आक्षेप मुख्यतः दिनकर व मुक्तिबोध ने किया है। मुक्तिबोध के शब्दों में कहें तो मनु को वास्तविक समता की खोज करनी ~~चाहिए~~ थी चाहिए किन्तु वे काल्पनिक समरसता की खोज करते हैं।

ख) दिनकर का दावा है कि कामायनी नारी दृष्टि ~~से~~ के संदर्भ में भी असफल रचना है। प्रसाद ने श्रद्धा का महिमामण्डन किया है जिसका व्यक्तित्व यथार्थ से नहीं, मध्य कालीन व रोमांटिक छवियों से निर्मित हुआ है। श्रद्धा जैसी नारियाँ वास्तविक जीवन में उपकरण की तरह इस्तेमाल की जाती हैं।

शोषित होती है। इड़ा का रूप आधुनिक नारी का रूप है किन्तु प्रसाद ने उसे उभरने नहीं दिया है, दबा दिया है। मुक्तिबोध, डॉ० नामवर सिंह व आचार्य शुक्ल ने भी इसी प्रकार की आलोचना की है।

ग) आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी व डॉ० रमेश कुन्तल मेघ का दावा है कि 'कामायनी' का कथानक मूलतः त्रासदी के उपादानों से निर्मित है। प्रसाद की विफलता यह है कि उन्होंने स्वयं हस्तक्षेप करके कथानक की गति को उलट दिया और सुखांत बना दिया।

(घ) कामायनी की असफलता का एक कारण उसकी महाकाव्यात्मकता के भीतर है। महाकाव्य में जैसा घटना-व्यापार और वस्तु-वर्णन अपेक्षित होता है वैसा कामायनी में एकदम नहीं है। इसका कथानक अत्यंत विरल है घटनाएं नहीं के बराबर घटती है। चूँकि बहिर्जीवन से ज्यादा महत्वपूर्ण अंतर्जीवन की कथा है इसलिए कथानक अत्यन्त अमूर्त भी हो गयी है।

ङ) दिनकर के अनुसार, कामायनी की भाषा भी कमजोर है। वे कहते हैं कि 'कामायनी' में ऐसे अंश कम हैं जिन्हें पढ़ते हुए मन पर आप्रिमता के धक्के नहीं लगते हैं। अभिव्यक्ति की असमर्थता और शब्दों के कुप्रयोग से पाठक का मन न खीझता है।

इन आलोचना से यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है कि 'कामायनी' सचमुच कि असफल कृति है। वस्तुतः कोई भी रचना पूर्ण नहीं होती है। कुछ वैचारिक कलात्मक आयामों में वह समीक्षकों को अनुचित प्रतीत होती है। इन सारी कमियों के बावजूद 'कामायनी' आधुनिक हिन्दी का सबसे महत्वपूर्ण काव्य है इसमें संदेह नहीं।

प्रस्तुतकर्त्ता

दिनांक
07/10/2020

वैनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं०— 8292271041